ओमशांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब जब बाप कहा जाता है तो इतने बच्चों का एक जिस्मानी बाप तो नहीं हो सकता। यह है रूहानी बाप ढेर बच्चे हैं। बच्चों के लिए ही यह (टेप मुरली आद) सामग्री हैं। बच्चे जानते हैं हम अभी संगम युग पर हैं। बैठे हैं पुरुषोतम बनने। यह भी खुशी की बात है। बाप ही पुरुषोतम बनाते हैं। यह लक्ष्मी नारायण पुरुषोतम हैं ना। इस सृष्टि में ही उतम पुरुष। मध्यम और कनिष्ठ पुरुष होते हैं। आद में उतम, बीच में मध्य, अंत में कनिष्ठ। मनुष्य तो समझते हैं जब कलयुग का अंत होगा तब हम कनिष्ठ होंगे। अभी कनिष्ठ नहीं समझते हैं। हर चीज पहले नई बीच में मध्यम फिर कनिष्ठ पुरानी बनती है। दुनिया का भी ऐसे है। कनिष्ठ पुरुष इन बातों को नहीं जानते। वे कह देते शास्त्रों में ऐसा लिखा हुआ है। तुम अभी शास्त्रों के आधार पर नहीं हो। भगवान कोई शास्त्र नहीं सुनाते। तुम कोई शास्त्र नहीं पढ़ते हो। यहां कोई ऐसा गुरु नहीं होगा जिसने शास्त्र न पढ़े हों। शिव बाबा शास्त्र थोड़े ही पढ़ा है। यह बाबा तो बहुत पढ़ी है। जिन2 बातों पर संशय पड़ता है तो फिर समझाना है। बहुत करके ब्रह्मा के लिए ही कहते है कि इन को क्यों बिठाया है। तो उनको झाड़ के चित्र पर ले आना चाहिए। देखो यह नीचे तपस्या कर रहे हैं। उपर में दिखाया है बहुत जन्मों के अंत में खड़ा है। इनको हम भगवान वा देवता कहां कहते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं इन में प्रवेश करता हूं। समझानेवाला बड़ा अकलमंद चाहिए। एक भी बेअकल निकलता है तो सभी ब्रह्माकुमारियों का नाम बदनाम हो जाता है। पुरा समझाने नहीं आता है। कम्पलिट पास तो अंत में ही होने हैं। इस समय 16 कला सम्पूर्ण कोई बन न सके। नम्बरवार जरूर होते हैं। बाबा के पास समाचार आया जयपुर में एक यादव कुल का आया बोला हमारे लिए क्यों लिखा है यादव विनाश काले विप्रीत बुधि। अब उनको समझाने वाला चाहिए ना। इनको कहा गाया यहां द्वीप वासी यादव लिखा हुआ है। बोले यादव नाम तो लिखा है यह निकाल दो। और यह तो हम सब के लिए लिखते हैं कि विनाश काले विप्रीत बुधि है। विनाश तो सब का अभी खड़ा है। जिनकी परमपिता परमात्मा से प्रीत नहीं है तो विनाश काले विप्रीत बुधि ठहरी ना। तुम्हारी बाप के साथ प्रीत तो है नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी कह दिया सब में कह देते हो। प्रीत बुधि तो नहीं है ना। इस पर तुम समझायें सकते हो जो प्रीत बुधि हैं। वह विजयन्ति। जो गाली देते हैं परमात्मा को उनको विप्रीत बुधि, विनश्यन्ति कहते हैं। इस में तुम बिगरते क्यों हो परन्तु आज कल मनुष्य हैं गुण्डे। कोई भी बड़े आदमी को जेल में डालने में देरी नहीं करते हैं। दुश्मनी होती है तो फिर कोई न कोई इलजाम लगाय देते हैं शुट कर देते हैं। हंगामा तो मचेंगा। कोई क्या कर ही आ सकते। पुलिस का पहड़ा है, मिलटरी खड़ी है गोलियां गैस आद चलाय लेते हैं। बाबा को लिखते है गुण्डे लोग कहते हैं हम आग लगावेंगे यह करेंगे। बाबा ने तुमको कहा था इनश्योर कर दो। बच्चे जानते हैं इनश्योर हो सकता है। बाबा तो राय देते हैं लिखने वाले को भी ना। सिर्फ कहना थोड़े ही है। यह होना चाहिए। यह करना चाहिए। करो भी ना। मनहूस तो की नहीं जाती। बुधि भी कहती है जहां अपने प्रापर्टी के लिए डर है तो इन्शयुर करना चाहिए ना। पूछते हैं कितने का इन्शयुर करें। 500 का कर दो। कहते हैं यह तो ऐक2 पिक्चर भगवान के हैं। यह तो बहुत किमती चीज हैं। इनका तो बहुत इन्शयुर होना चाहिए। और भगवान को थोड़े ही इन्श्योर करना है। तुम इन्श्योर करते हो पिक्चरस को। सभी पिक्चर्स जल जावेंगे। तो सब भर कर देंगें। कम जलेगा तो इतना भर कर देंगे। सिर्फ लिखते रहते यह होना चाहिए। बच्चों की अवस्था को बाप ही जाने। लिखते है आप ने जो क्रिमनल आय पर समझाया है वह बिलकुल ठीक आप ने कहा है। बाबा नाम नहीं बतायें सकते। नहीं तो फिर उनको इस दृष्टि से देखते रहेंगे। मन2 करते रहेंगे। फिर बिगरने में देरी नहीं करते हैं। जैसे गाजी लोग बिगड़ते हैं। तो मारने लग पड़ते। पत्थर मारना भूख हड़ताल करना यह सब सिखलाये कर के गये हैं। तो अभी कुछ सब करते रहते हैं। दिन प्रतिदिन प्रति दिन तमो प्रधान बनते जाते हैं। वह तो समझते हैं कलयुग अजन रिरही पहन रहा है। अजान नींद में बिलकुल सोये हुए हैं। कभी 2 कहते भी हैं लड़ाई है तो जरूर भगवान कोई रूप में होगा। यह तो बताते नहीं। उन को जरूर किस में प्रवेश होना है। भागीरथ गाया जाता है। रथ तो आत्मा का अपना होगा।

…स में आप प्रवेश करेंगे। उनको कहा जाता है … वाकि यह जन्म नहीं लेते हैं। इनके … ही बाजु में बैठ ज्ञान देते हैं। कितना अच्छी रीत समझाया जाता है। त्रिमूर्ति चित्र भी है। त्रिमूर्ति तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को ही कहेंगे। जब यह कुछ कर के गये हैं। जो फिर रास्तों पर, मकानों आदि पर नाम रखे हैं। जैसे इस रोड का सुबासमार्ग नाम है। सुबास की हिस्ट्री तो सब जानते हैं। उन्हों के बच्चे बैठ हिस्ट्री आदि लिखते हैं। फिर उनको बनाये2 बड़ा कर देते हैं। कितनी भी बड़ाई बैठ लिखे। जैसे गुरुनानक का पुस्तक कितना बड़ा बनाया है। इतना उसने तो लिखा नहीं है। ज्ञान के बदली भक्ति की बातें लिखी हैं ना। ज्ञान बिलकुल है नहीं। ज्ञान को लिखने की दरकार नहीं। यह चित्र आदि भी बनाये जाते हैं समझाने लिए। यह तो जानते हैं इन आँखों से जो कुछ दिखाई पड़ता है यह सब भस्म हो जानी है। बाकि आत्मा तो यहाँ रह न सके। घर चली जायेंगी। ऐसी2 बातें कोई सब की बुधि में बैठती थोड़े ही रहे। अगर धारण होती है तो क्लास क्यों नहीं चलाते हैं। 7-8 कर्मि ऐसा कोई तैयार नहीं होता जो क्लास चलाये सके। बहुत जगह ऐसे चलाते भी हैं। फिर भी समझाते हैं भाताओं का मर्तबा ऊँच है। चित्र तो हैं। मुरली धारण कर फिर उस पर थोड़ा समझाते हैं। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बहुत सहज है। फिर पता नहीं क्यों ब्रह्मणी की माँगनी करते हैं। ब्रह्मणी कहाँ गई तो बस बैठ जाते। मुरली तो कोई भी बैठ सुनाये सकते हैं ना। कहेंगे फुर्सत नहीं। क्लास में नहीं आते। आपस में खिट खिट हो जाती। और सुबह को तो सभी को फुर्सत होती है। यह तो अपना ही कल्याण करना है। तो औरों का भी कल्याण करना अपना है। बहुत भारी कमाई है। सच्ची कमाई करनी है। जो मनुष्यों का हीरे जैसा जीवन बन जाये स्वर्ग में तो सब आवेंगे ना वहाँ सदैव सुखी रहते हैं। ऐसे नहीं प्रजा की आयु कम होती है। नहीं। प्रजा की भी आयु बड़ी होती है। … अथवा … पद कम … होती … तो कोई … क्लास चलाना चाहिए। ऐसे क्यों कहते अच्छी ब्रह्मणी चाहिए। फिमेल नहीं है तो मेल भी क्लास चलाये सकते हैं। …ड़ी न मारनी चा कोई2 को अहंकार आ जाता है। यह छोटी2 बच्चियाँ क्या समझावेंगी। माया के विघ्न बहुत आते हैं। बुधि में नहीं बैठता बाबा तो रोज समझाते रहते हैं … शिव बाबा तो टापिक पर नहीं समझावेंगे। वह तो सागर है- उछलें मारते रहेंगे। कब बच्चों को समझावेंगे कब नई2 प्वाइन्ट समझावेंगे। मुरली तो सब को मिलती ही है। अक्षर नहीं जानते हैं तो सिखना चाहिए। अपनी उन्नति के लिए करना चाहिए। अपना भी और दूसरे का भी कल्याण करना है। यह बाबा भी सुनायें तो सकते है ना। परन्तु बच्चों का बुधि योग शिव बाबा तरफ रहे इसलिए हमेशा समझो शिव बाबा कहते हैं। शिव बाबा को ही याद करो। वह सुनाते हैं। शिव बाबा परमधाम से आये हैं। मुरली सुनाये रहे हैं। यह तो परमधाम से नहीं आये सुनाते हैं, हमेशा समझो शिव बाबा इस तन में आये हमको मुरली सुनाये रहे हैं। यह बुधि में याद होना चाहिए। यथाति रीति यह बुधि में रहे तो यह भी यात्रा हो गई ना। परन्तु यहाँ बैठे भी बहुतों का बुधि योग इधर उधर चला जाता है। गाँव याद आयेगा, घरबार याद आयेगा। बुधि में यह याद रहना है शिव बाबा हमको इस में बैठ सुनाते हैं। हम शिव बाबा की याद में मुरली सुन रहे थे फिर बुधि योग कहाँ भाग गया। ऐसे बहुतों का बुधि योग चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छीरीत रह सकते हैं। समझते हो शिव बाबा परमधाम से आये हैं। बाहर ग्रामों याद में रहने से यह ख्याल नहीं रहता। कोई समझाते हैं शिव बाबा की मुरलियाँ कानों से सुन रहा हूँ। फिर सुनाने वाले का नाम भी याद न रहे। यह ज्ञान सारा अन्दर का है। अन्दर में ख्याल रहे शिव बाबा की मुरली हम सुनते हैं। ऐसे नहीं कि फलानी बहन सुनाय रही है। शिव बाबा की मुरली सुन रहे हैं। यह भी याद में रहने की युक्तियाँ हैं ना। ऐसे नहीं कि जितना समय मुरली सुनते हैं उतना याद में हैं। नहीं। बाबा कहते हैं बहुतों की बुधि कहाँ2 बाहर में चली जाती है। खेती बाड़ी आदि याद आती रहेंगी। बुधि योग भटकना न चाहिए। शिव बाबा को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है। परन्तु माया याद करने नहीं देती। सारा समय शिव बाबा की याद में रह नहीं सकते। और2 ख्यालात आ जाते हैं। … नम्बरवार पुरुषार्थ

3

ह× अनुसार हैना। जो बहुत नजदीक वाले होंगे×उनकी वुधि अछी रीति लग्रेगी।सब थोड़े ही 8की माला या 108की माला मैं आये सकेंगे।ज्ञान,योग, दैवी गुण यह सब अपन मैं देखना है।हमारे मैं कोई अवगुण तो नहीं है। माया के वस तो नहीं हुआ। कोई2 बहुत हबछी वन जाते हैं।हबछ का भी ××× भूत होता है। माया की प्रवेशता कैसे होती है जो भूख2 करती रहती हैं।खांव2 पेट मैं बलावो।कोई2 मैं खाने की वहुत हबछ होती है।खाना कायदे सिरे खोना चाहिए।ढेर वच्चे है ।अभी वहुत कच्चे बनने वाले हैं।कितनी ब्राहमण ब्राहमणियां बनेंगी। वच्चों का भी कहता हूं तुम ब्राहमण वन गदी पर वैठो।×× सिधि माताओं को आगे रखा जाता है। शिव शक्ति भारत माताओं की जय। यहां देखो जिसकी स्त्री वहुत अछी होती है तो उनको विलायत मैं ले जाते है।अछी नहींस्त्री× होती तोले नहीं जावेंगे। देह का अभिमान भी है ना।। यहां वह सव× वाते छुड़ाये देते है। वाप कहते है अपन को आतमा समझो।वाप को याद करो।स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। स्वदर्शन चक्र धारी तुम ब्राहमण हो।नया कोई आये तो समझ न सके। तुम हो सर्वोतम ब्रहमा मुख वंशावली ब्राहमण कुल भुषणस्वदर्शन चक्र धारी। नया कोई सुने तो कहेंगे स्वदर्शन चक्र तो विष्णु को है।यह फिर इन ×× सब को कहते रहते।मानेंगे नहीं।इसलिए नये2 को सभा मैं अलाउ नहीं करते हैं।समझ नहीं सकेंगे।कोई2 फिर विगर पड़ते हैं। क्या हम वेसमझ है जो विठाया नहीं जाता है।क्योंकिऔर ××××× सतसंगों मैं ×× ऐसे कहीं जाने पर हीरे हुए है ना।वहां तो शास्त्रों की ही वाते सुनाते रहते है।वह सुनना हरेक का हक है।यहां तो सम्भाल रखनी पड़ती है। कोई शास्त्रों की विरुध वाते देखते है तो विगर पड़ते हैं।चित्रों की भी सम्भाल करनी पड़े। हम बाबा के साथ इस आसुरी ×× दुनिया मैं आये हैं।अपनी राजधानी स्थापन करने। जैसे क्राईस्ट आया अपनी धर्म स्थापन करने। यह वाप राजधानी ×× स्थापन करते हैं। इसमैं हिंसा की कोई वात नहीं। गुरु लोग कब हिंसा कर न सके।गुरु गोविन्दसिंह के लिए हिंसा दिखाई है।परन्तु वह हिंसा तो कर न सके।अपनी धुन्ध सरकार हैं।जिसको जो आया करते रहते। गाते भी हैं मुत पलित कपड़ धोये। ... तु समझते थोड़े ही है।भगवानुवाच है इन साधुओं का भी उधार करने आता हूं।परन्तु समझते ... ही है। ×× नानक ने भी वाप की महिमा गाई मुत पलिति कपड़ धोये।खुद तो मुत पलिति है ना। ... तो विलकुल घोर अंधियारे मैं है। वाप आये ... अंधियारे से फिर घोर सोझरा करते है। वावा, वावा ... कर भी फिर मुंह मोर देते है।पढ़ाई छोड़ देते।इन जैसा महा मुर्ख फिर कोई होता नहीं।भगवान विश्व मालिक बनाने पढ़ाते है। उस पढ़ाई को छोड़ दे उनको ×× कहा जाता है महान कम बखत।कितना जबर खजाना मिलता है।ऐसे वाप को थोड़े ही कब छोड़ना चाहिए?। एक गीत भी है आप भल कुछ भी ... म आप का दर कभी नहीं छोड़ेंगे।यहां तो ×× थोड़ी वात विगर झट छोड़ देते।वाप को फारकीत दे ... ड़त है जो छोड़ जाते है।वाप के वने , वाप थोड़े ही छोड़ेंगे।वाप आये ही ×× बेहद की वादशाही ... छोड़ने की तो वातही नहीं।वाप तो आये ही है विश्व का मालिक बनाने। ऐसे नहीं कहेंगे चले जाओ। ... अछी धारण करनी है।स्त्रीयां भी रिपोर्ट करती है।यह हमको वहुत तंग करते हैं।नंगन होने।फिर ... माया जाता है। ऐसे भी वहुत झगड़ा करने वाली होती है। वच्चों मैं भी हिमत चाहिए।उनको रवाना ...। आज कल लोग वहुत2 खराव हैं। वड़ी सम्भाल करनी पड़ती है। भाईयों को वहनोंकी सम्भाल ... वाप को छोड़ने से वर्सा खलास हो जाता है।हम आतमाओं को वाप से वर्सा जरुर लेना है।× कोई ... मैं। निश्चय वुधि विजयन्ति।संशय वुधि विनश्यन्ति।फिर पद वहुत कम हो जाता है।ज्ञान एक ही सागर दे सकते हैं। वाकि सब है अज्ञानी।भल कोई अपन को कितना भी ज्ञानी समझेपरन्तु वाप ... भी अज्ञानी है।ज्ञान किसको कहा जाता है यह भी ××× अज्ञानी मनुष्य नहीं जानते।

... सिकिलधे रुहानी वच्चों को रुहानी वाप व दादा की दिल व जान सिक व प्रेम से ×××× ×××× याद गुड मार्निंग। अछा जी विदाई।